# कला में मनोवैज्ञानिक पक्ष

**डॉ0 संध्या पाण्डेय**

**शोध सारांश–**

कला प्रत्येक मानव में निहित आन्तरिक गुण हैं वह सतत् चलने वाली प्रक्रिया है, यह मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य प्रभावों से जन्म लेती है। यह कलाकार के तत्कालीन मनोभाव का विन्यास रचती है। निर्भर करती है।

कला के मनोविज्ञान में इस प्रक्रिया की महत्ता गुणवत्ता को जानने के लिये एक प्रासंगिक पक्ष है कला का मनोवैज्ञानिक सौन्दर्य सम्बन्धी कलाकृतियों की संवेदी धारणा, का क्षेत्र उत्पन्न संज्ञानात्मक और भावात्मक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन मात्र है। इसमें कलाकार की रचना भावना, स्मरण शक्ति की स्पन्दन मनोवृत्तियो के आधार पर आगे बढ़ती है। जिसमें मनुष्य के आस पास के व्यक्तिगत वातावरण, सामाजिक, प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी देते है। फ्रांयड द्वारा बताये गये चेतन मन, अचेतन मन, अवचेतन मन, यह तीनों ही अवस्थायें मन की अवस्थाओं की ऊर्जा का केन्द्र है। मानसिक बिम्बों के प्रारम्भिक अवयवों के विश्लेषण करने से यह ज्ञान होता हैं कि समेकित दृष्टि, स्मृतियों, स्पर्श एवं गति से उत्पन्न स्थिति जन्य अनुभूति परक सामग्री से रचित है।[1]

कलाकृति का निर्माण करते समय कलाकार अनेक विधाओं प्रक्रियाओं से गुजरता हैं, जिसमें उस समय की उसकी तत्कालीन स्थिति भाव का नियोजन करता है। कल्पना मन की वह रचनात्मक किया है, जिसके द्वारा कलाकार अपने पूर्व अनुभवों और नवीन सृष्टि के आधार पर कृतियों निर्माण करता है।

कल्पना एक स्वतन्त्र मानसिक स्थिति को जन्म देती है, यह प्रक्रिया कलात्मक प्रत्यक्ष, ज्ञान तथा कलाकार की स्मृति के समान बिन्दुओं से जानता है। कलात्मक पदार्थ सत्ता के अनुभव से आबद्ध नही रहती है।[2] अपितु मनोवृत्ति के सहारे आगे बढ़ती है।

कला कलाकार एवं उसके सृजन के समझने के लिये उसके मन और आस पास के वातावरण को भी समझना आवश्यक है। जिसमें उसकी रूचि, मूल्य बोध, स्फूर्ति असौ मध्याम आदि स्पष्ट दिखाई देते है।

---

**असिस्टेंट लेक्चरर, जे0आर0डी0एस0यूनिवर्सिटी चित्रकूट**

## कला में मनोवैज्ञानिक पक्ष

मनुष्य की अन्तःश्चेतमा के अनुसार हम कला को देखते है, जिसमें कलाकार स्वयं भी संतुष्ट होता है एवं सामने वाले दर्शक को भी संतुष्ट करने का प्रयास करता है। इसके द्वारा निर्मित कलाकृतियों का प्रभाव समाज पर भी पड़ता है।

कला में क्रोचे का कथन है कि "सहज ज्ञान या अंतर्जज्ञान है श्रेष्ठ कला सहजानुभूति का संकलन करती है, जो हमेशा संम्बबेदनाओं या प्रभावो से सम्बदृ होती है।"[3]

कलाकार के चेतन मन/अचेतन मन /विशिष्ट् चेतन मन को प्रदर्शित करती है। इसमें कलाकार जो भी सृजित करता है वह अपनी आन्तरिक चेतना और ब्राह्य चेतना के माध्यम से उसे संचरित करता है।

कला मनोवैज्ञानिक आधार पर एक बिम्ब लेकर चलती है। 1 माया चारी 2 रहस्यवादी रूप 3 रूढ़िवादी रूप 4 आदर्शवादी रूप 5 यर्थाथवादी रूप इन्ही बिम्बों का ज्ञान प्रतिबिम्बित होता है यह लोकप्रिय आधार बन कृति समृद्ध करता है। पर दिशाओं आधुनिक कलाकार एवं कला स्वरूपों पर कार्य करता है।

"फ्रेंच दार्शनिक बर्गसा और 'भरिता', इटालियन दार्शनिक क्रोचे और इसी प्रकार अस्तित्वाद सम्प्रदाय के चितक साग कला का सृजन तथा रस ग्रहण का श्रोत है।

मन की अर्न्तभूमि पर मान्यता है कि– इसी का नाम कलात्मक सृजन का सुख है। यही स्थिति रसस्वादन और सौन्दर्यानूभूति की है।[4]

कला मानव मन की सहजात प्रवृति है इसलिए सनातन है और सामाजिक भी समिष्ट और व्यष्टि हैं सार्वभौमिक और सार्वकलिक भी। यह मानव स्वभाव में जन्मजात प्रवृत्ति और उसकी पहचान है।

कला सबके लिये है। "मन के सामन कोई मौलिक सर्जक नही है। कला मनोमय सृष्टि है, स्वान्त सुखाय अतीव अतैव मन, अतिमना अचेतन है, अर्थात मन का कला से सीधा संम्बन्ध है। सृजन मनोवैज्ञानिक की मान्यता है कि सर्जनों धारणात्मक क्रिया मुक्त

## कला में मनोवैज्ञानिक पक्ष

और स्वतः स्फूर्त होती है।''[5] कला सृजन के पीछे जिस मानसिक स्थिति का शोधन करती है वह प्रवृत्ति विभिन्न व्यक्तिगत इच्छाओं के दमन के पश्चात् बनती है। यह बात मनोवैज्ञानिक (मनोविज्ञान) के संदर्भ में कही जा सकती है कि, समाज द्वारा तिरस्कृत व अग्रहित प्रवतियॉ एवं इच्छाओं चेतन मस्तिष्क द्वारा दमित किये जाने पर अचेतन मस्तिष्क की दमित इच्छा जिस रूप में दमित की गई है। उसी रूप में अभिव्यक्ति नही पा सकती तब वह कला नाटकीकरण, प्रतीकीकरण, प्रक्षेपण आदि माध्यमों से प्रक्षय लेकर विभिन्न स्वरूप में प्रकट होती हैं।

क्रोंचे का कथन है की – कला सहज ज्ञान या अंतज्ञान है, श्रेष्ठ कला सहजानुभूति का संकलन करती है। जो हमेशा संवेदनाओं या प्रभावों से सम्बद्ध होती है। हम सुन्दर की अनुभूति को सौन्दर्य, परक मधुर की अनुभूति को माधुर्य परक और महान की अनुभूति को उदान्त कहते हैं। संस्कृति आदि के काल से ही 'सुन्दर', 'मधुर' और 'उदान्त' की सृजनात्मिका को मानव से प्रारम्भ कर दी थी।

"कला का सम्बंध अनुभूति परक है अतः अनुभावित मन का आने वाली, प्रतिनिधित्व करने जिसे नकारा नहीं जा सकता। अर्थात मनोविज्ञान कला के क्षेत्र में उनके सृजन और अनुभूति दोनों के साथ जुड़ जाते है।''[6]

मानवीय प्रक्रिया चाहे वह सामान्य हो या आसामान्य वह उसके मस्तिष्क–मनोविज्ञान पर आधृत होता है। कला एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें सृजनकर्त्ता और दार्शनिक व्यक्ति दोनो के मध्य एक मनोभाव का संबंध बनता है। कला मर्मज्ञ रूसी टालस्टॉय ने यह मापन रखा है।

"भारतीय चित्रकला के खामय वातावरण विचार साम्य एवं विरोधी रंग धर्मों के संयोजन के लिए आबद्ध है। कलात्मक अनुभूति के जितने परिवेश उसकी मानसिक स्थिति अथवा सौन्दर्य बोध के लिये जितने प्रकारान्तरों से अभिव्यक्ति के क्षेत्र में आते है, उतनी ही सहजता उसकी कला में मार्जन एवं सुष्ठता उत्पन्न करती है।[7]

## कला में मनोवैज्ञानिक पक्ष

मनोविज्ञान कला के लिए आधार श्रोत तो बन नहीं सकता परन्तु कला चिन्तन के क्षेत्र में कुछ उपयोगी तथ्यों को अवश्य उजागर करता है। मनोविज्ञान के अंतर्गत मन एवं मानसिक व्यापारों का क्रमिक वैज्ञानिक अध्ययन है। क्रोचे ने भी मानस व्यापार में दो व्यक्तियों को माना है–1 सैद्धान्तिक 2 व्यवहारिक

कला में रंगो का मनोवैज्ञानिक उदाहरण भी देखने को प्राप्त होता है। जैसे–पिकासो के ब्लू पीरियड के बारे में सभी अवगत है–जब वे उदास थे उनकी कृतियों में नीले शेड के रंगों की विशेषता दिखी। जब उन्होंने जीवन में खुशी के पल का अनुभव किया तो उन्होंने पिंक शेड। रेड शेड के रंगों की विशेषता दिखी 20 बी0 शताब्दी में शुरूआत में रंग मनोविज्ञान के रूप में जाने जाना लगा।

कार्लजन और फेबर बिरेन के मार्गदर्शन में इन तरीको को समझने की कोशिश की। रंग विज्ञान मनोविज्ञान व्यक्ति की रचनात्मकता या कलात्मक पक्ष को बढ़ाता है। रंगो की महत्ता उसका प्रभाव हमारे मनोवृत्ति पर अत्यधिक डालता है। इसका प्रयोग मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में (थैरिपस्ट) लोग करते है।

**संदर्भ सूची–**

1. कॉनरड फीडलर ई0 एच गॉम्बरिच द्वारा उदृष्ट आर्ट एण्ड इलूजन–पृ0 16
2. मेक्डूगल विलयम इन्टडक्शन टूसोशल साइकल आजि0 पृ0 25/26
3. डॉ0 चतुर्वेदी ममता– सौन्दर्य शास्त्र पृ0 102
4. गोंड आदर्श क्रिरगटिविटी एण्ड कण्टम्प्रेरी आर्ट इन इण्डिया कला में सृजनात्मकता पृ0 65
5. शर्मा हरद्वारी लाल–कला मनोविज्ञान पृ0 9
6. डॉ0 भट वासुदेव कला मनोविज्ञान के तत्व नियम पृ0 95
7. शुक्ल रामचन्द्र कलादर्शन पृ0 38